

नन्दीपति गीतिमाला

गौरी-पूजा

गिरिजा पूज्य चलु^१ बाला
देशु अमयवर मदन गोपाला^२
गोमतीक तट^३ लसु^४ फुलवारी
से फुल तोडवि राजकुमारी
वाटी भरि चानन करपूर^५ तमोल
गौरिहि दय रुक्मिणि^६ कर जोर
पूजिय^७ गिरिजे शुभ यश लेहु
जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु
नन्दीपति मन सुनू^८ सेआनि^९
देशु^{१०} अमयवर सारंग पानि

मि० गी० सं० (भाग-३, गीति-४)

[१] अन्य पाठ

१. चलु चलु । ४. लसे । ५. करूर । ६. रुक्मिनि । ७. पूजिय । ८. सुनह ।
९. सयानि । १०. देहु ।

अन्य पाठ सँ

२. 'गोपाल'क स्थान-मे 'गोपाला' । ३. 'तीर'क स्थानमे 'तट' ।

महेशवानी

माला गाँधू हे गौरी
 बम्भोला के^१ पहिरायव^२ माला गाँधू हे गौरी ।
 नहि घर हम सुत चरखा काटल नहि बाँटल हम डोरी ।
 पेंच उधार कहाँसँ लायव नहि घर दाम न कोरी ।
 एक सय^३ आठ रुद्र केर माला सौसे^४ सर्पक डोरी ।
 निर्गुण बान्ह गेंठ^५ दस बान्हल नाग फणा केर भूरी ।
 माला गाँधि कयल तैयारी लय चलु शिवक दुआरी ।
 पार्वती^६ पति थिकथि दिगम्बर^७ देखि माल सुसकाइ ।
 मनहि^८ नन्दीपति सुनु ए मनाइनि इहो पद थिक निरवाणी ।
 जाति-पाति एको नहि हिनका तीन भुवन के दानो ।

किशोरी कुमारी, घोवरडीहा



[२] विद्यापतिर शिवगीत : पृ० १५-१६, गीत २५ क पाठान्तर

१. के । २. पहिरायव । ३. सौ । ४. सउंसे । ५. बान्ह गेंठ । ६. बान्हल ।
 ७. केचके । ८. दुआरी । ९. पारवती । १०. थिका शिवशङ्कर । ११. 'मनहि'
 विद्यापति ।' तथा पाद टिप्पणीमे देख गेल अछि 'मनहि' नन्दीपति 'इति पाठान्तर' ।

हमरा अपना माथसँ ई गीत निम्नरूपमे भेटल :—

माला गाँधू हे गौरी

शिवशङ्कर के पहिरायव माला गाँधू हे गौरी
 ने हम चरखा तुर सुत काटल ने हम बाँटल डोरी
 किनका घर हम पेंच लय जायव ने अछि दाम ने कोड़ी
 एक सय आठ रुद्र (मुंड) के माला सौसे सर्पक डोरी
 निर्गुण ब्रह्मा गेंठ ने देखि नाग पेंच के भूड़ी
 माला गाँधि तैयार हम कलहुँ लय पहुँचाबथि भूरी
 जाति-पाति एको नहि बूझल नगर नगर बुलि ऐली

उचिती

बड़ उँच हेमत पहाड़ रे
 निकसल निरमल धार रे
 तनिकहु गंगा नाम रे
 जनिक न पावः उपाम रे
 पुरुखक एहनेः वानि रे
 "सेवल से हम जानि रे
 से की होथि कठोर रे"
 तम नहि करथि उजोर रे
 कह कोविद अवधारि रे
 सुपुरुख करथिः विचारि रे

दादजी, सोचपुर दरभंगा

[३] पाठान्तर : स्व० महेश्वरठाकुर, भीठ भगवानपुर, दरभंगा ।

१. निकसल : २. पाखिज । ३. एहन । ४. हुनि सेवल हम । ५. अनेक ठाम
 सातम आठम पदक अभाव भेटैछ । ६. कहयि ।

उचिती

हम अबला अज्ञानि रे
 ससिक^१ सेवल हम^२ जानि रे
 आज हमर बड़ भाग रे
 एहन परस मनि पाव रे
 डेडि बुरल^३ मकधार रे
 लय^४ जहाज करु पार रे
 सात खण्ड^५ कुसिआर रे
 निकसल^६ प्रेम पिआर रे
 कह 'बादरि' अवधारि रे
 गुनमन्त जग^७ दुइ चारि रे

बुचनीदाइ, नवानी, दरभंगा

[मि० गी० सं० (भाग-१, गीत-५२), मि० म० (गीत-८७३) के पाठान्तर :--
 [४] १. निरजनि । २. शशि । ३. गुण । ४. दुबल (मि० म० में लिखि दुबल) ।
 ५. लै ।

विशेष : : केवल चारि पंक्ति, प्रथम, दोसर, पांचम ओ. छठम समान छैंक । तेसर, चारिम
 तथा अन्तिम चारि पंक्ति नहि छैंक । एकरा बदलामे तेसर-चारिमक बदलामे छैंक--

हम सों अनेक कुरीति रे
 सुपुरुष ने तेजै विरीति रे

भनिता मे छैंक -

भगहि विद्यापति मान रे
 सुपुरुष बसथि सुठाम रे

मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-१४), मि० म० (गीत-६१८) मे एहि गीतक पांचम
 छठम भेटैत छैंक जाहिमे 'निकसल'क स्थानमे 'निकसय' छैंक ।

अन्य पाठान्तर

४. उपमा पाहुन पाव रे । ७. रस सण्डित । ८. निकसय । ९. जन ।

उचिती

जँओं करु सुजन सिनेह रे

उपमा पाहुन नेह रे

हेम करः मण्डप हेम रे : मनि^{१४} कादव लपटाए रे
 चानन वन कत नीम रे : तैआने^{१५} तकर^{१६} गुन^{१७} जाए रे
 काग^{१८} कोइली एक भाँति रे : अलि काँ^{१९} कुसुम अनेक रे
 भेम्ह^{२०} ममर एक काँति रे : मालति कै^{२१} अलि एक रे
 हेम^{२२} हरदि कत बीच रे : कह 'बादरि' अवधारि^{२३} रे
 गुनहि चिन्ही^{२४} उच्च^{२५} नीच रे : सुपुरुष जन दुइ चारि^{२६} रे

दाइजी, लोजपुर, इरमंगा

[५] i. सि० गी० सं० (भाग-३, गीत-१३) क पाठान्तर :—

५. काक। ६. काँति। ७. दुइ। ८. भाँति। ९. हिगु। १०. चिन्ह।
 ११. उच्च। १२. मणि। १३. तनिक। १४. कै। १५. के।

विशेष :—पाँचम-छठम पंक्ति अन्तिम दुइ पंक्ति सँ पूर्व छैक।

ii. H. M. L. (Vol. I 422) क पाठान्तर :— गजहरा-हस्तलेखसँ ई गीत
 उद्धृत कयल गेल अछि। जाहिमे प्रथम चारि पंक्तिक अभाव छैक।

११. कर। २०. बादरि कवि अवधारी।

iii. मिथसंनक पाठान्तर :—

४. प्रथम चारि पंक्तिक स्थानपर निम्नलिखित पंक्ति छैक :—

वह जन नकर पीरीति रे

कोपहु न तजय सेति रे

एगारहम-बारहम पंक्ति छैक नहि। २१. मणिता मे विद्यापतिक नामयुक्त निम्नलिखित
 दुइ पंक्ति छैक—

विद्यापति अवधान रे

सुपुरुष न कर निदान रे

शेष छी पंक्तिक पाठान्तर निम्नलिखित अछि—

५. काक। ६. काँति। ७. भेम। ८. भाँति। ९. बुझिअ। १०. उच्च।
 १५. तै कि। १६. तनिक।

उचिती

प्रथम समागम भेल रे

हठहि रहनि^१ विति^२ गेल रे

नव तन^३ नव अनुराग रे : आव^४ ने जिउव^५ विनु कन्त रे
 विनु परिचय^६ रस जाग^७ रे : विरहे जीवक^{११} अन्त रे
 से सभ^८ पिय^९ तजि गेल रे : नन्दीपति कवि भान रे^{१३}
 जीवन^८ उपगत भेल रे : सुपुरुष ने करय निदान रे^{१३}

मिथिला देवी, उसमा मठ, दरभंगा

मन्तव्य :—प्रियसक्तक पद संख्या-४२ क अनुसरण करैत नगेन्द्रनाथगुप्त एहि पदकेँ
 विद्यापतिक पद मानि ५०८ संख्यक पद रूपमे रखलनि । श्रीविमान
 विहारी मजुमदार 'मैथिल-पोथी सँ प्राप्त पद' खण्डक अन्तर्गत उपर्युक्त
 दुहु महानुभावक अनुसरण करैत अविकल रूपमे एहि पदकेँ पद संख्या
 ४६५ मे स्थान देलनि ।

iv अन्य पाठ :—

१. अनुपम । २. हेमहि । ३. की । १९. की । २२. सुपुरुष करय विचारि रे ।

[६] i. सि० गी० स० (भाग-३, गीत-२६)क पाठान्तर :—

१. रनि । २. विति । ३. तव तन । ४. परिच । ६. से सभ संग । ७. पिये ।

८. जीवन । ११. आव की जीवन भेल ।

ii. मै० लो० गी० (पृ० २५७)क पाठान्तर :—

१. रनि । ६. से सब संग । ८. जीवन । ११. आव की जीवन भेल ।

iii. प्रियसक्त (पद संख्या-७१)क पाठान्तर :—

माँग सँसव पहु अव जीवव विरहे जीव भेल

भनइ विद्यापति भान रे सुपुरुष गुनक निधान रे

नगेन्द्रनाथ गुप्त पदसंख्या ६६३ मे तथा विमान विहारी मजुमदार पद संख्या ५०६ मे
 एकरा विद्यापतिक नाम पर रखने छथि ।

तिरहुति

सुन्दरि चललि शयन गृहि ना^१ : सेय रोय कजरा दहाय गेल ना^२
 दश पाँच^३ सखि सब कर घर ना^४ : आदं कहि^५ सिंदुर मेटाय भेल^६ ना^७
 जाइतहि लागु परम^८ डर ना^९ : नन्दीपति कवि आव^{१०} ना^{११}
 जैसे शशि काप^{१२} राहु डर ना^{१३} : देख सहल^{१४} सुख पाओल ना^{१५}
 हार टुटि^{१६} छिरियाय गेल ना^{१७} : (हुस सहि^{१८} सुख आव ना^{१९})
 भूषण बसन लोटाय^{२०} गेल ना^{२१} :

मिथिला-देवी, उसमा-मठ, दरभंगा

[७] i. गी० ली० सं० (भाग-३, शीत-३०) क पाठान्तर :—

१. चहु बिग। ४. जैसे शशि कापे वा 'शशि थल कापवि'। ९. अदं कहि। ११. भान।

ii. मै० ली० गी० (पृ० २४४) क पाठान्तर :—

१. चललिह पहु घर ना। २. हँसि हँसि। ६. मलिन। ९. अदं कहि। १२. 'भानु नाथ' कवि-घीर घर ना।

iii. मियर्सन (शीत संख्या-२६) क पाठान्तर :—

१. अलिखहु पहु घर ना। २. चहु बिग। ३. जाइतहु लागु परम। ५. जाइतहि हार टुटि गेल ना। ६. मलिन। ८. रोए रोए काजर बहाए देल ना। ९. अब कहि। १०. देख। १२. भनइ विद्यापति पाओल ना। १३. हुस सहि सहि।

विशेष :—नगेन्द्र नाथ गुप्त अपन विद्यापति पदावलीमे पद संख्या १४७ रूपमे संकलित कय लेलनि, विमानविहारी मजुसदार एहि पदकेँ मिथिलासे प्राप्त सन्दिग्ध पदक रूपमे पद संख्या २६६ मे संकलित कयलनि, तथा नन्दीपतिक गीत होवथा क सन्देह कयलनि।

iv. दाइजी, खोजपुर क पाठान्तर :—

२. चौदिस सखि। ३. प्रेम। १०. मलिन भेल। ५. छुवितहि हार टुटि गेल ना। ७. छुवितहि बसन हेरा गेल ना। १२. 'बुद्धिनाथ' कवि पाओल ना। १४. दुप छाहि सुख पाओल ना।

विशेष :—चारिम ऐकिक बाद सप्तम-आठम पंक्ति छैक। गीतक पोथीमे 'बुद्धि नाथ' भणित जाइत छैक किन्तु नायवा कालमे 'बुद्धिनाथ' नाम भाषितमे छलैक।

तिरहुति

चललि शयन वर^१ सुन्दरि रे आनन अरविन्दा^२
 शिर सँ^३ ससरल घोघट रे जनि^४ उमल चन्दा
 चलइत नूपुर कङ्कण^५ रे दुहु स्व एक काले^६
 दुर सँ हंस सवद सुनि^७ रे जनि बोल मराले^८
 नाभि विवर सँ निकसल^९ रे रोमावलि सापे
 से सौतिन वध कारक^{१०} रे आँचर धर^{११} भाँपे
 उड़हु न जान चकेवा^{१२} रे दुहु कुच उर^{१३} छाजे
 पवन परस उर अञ्चल^{१४} रे जनि भपटल बाजे
 नव परिचय नव कामिनि^{१५} रे भूषण^{१६} अनुरागे
 कह अनुभव कवि^{१७} बादरि रे सुनइत^{१८} सुख लागे

मै० गी० २०, पृ०, ३२, गीत-५६

[८] विशेष :— मै० गी० २० मे निधि उपाध्यायक (जे जोरखन भाक नामान्तर कहल जाइछ) रचना कहल गेल अछि, यद्यपि भणितामे 'बादरि' छैक । टिप्पणी (पृ० १२५) मे उजानक बदरीनाथ उपाध्यायक पूर्वज 'निधि' छलाह सेहो संभावना कयल गेल अछि ।

i मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-४३) क पाठान्तर :—

१. गृहि । २. आनन्द उरवृन्दा । ३. सौं । ४. जानि । ५. किकिनि । ६. दोख दुहु काने । ७. दुर सँ हंस सवद कह । ८. घर पिय जिवशाने । ९. सौं निकसलि । १०. कारन । ११. रह । १२. उरहु ने जानि चकवा शिशु । १३. उर कुचयुग । १४. उर आँचर । १५. नागरि । १६. अमिनव । १७. करि । १८. देखैत बड़ ।

विशेष :—पाँचम-छठम पंक्ति सातम-आठम पंक्तिक बाद छैक ।

ii मै० लो० गी० (पृ० २३६) क पाठान्तर :—

१. गृहि । २. आनन्द-उरवृन्दा । ५. किकिनि । ६. पिक कल अलसाने । ७. हंस सवद कह । ८. घर पिय जिवशाने । १२. उरहु न जान चकवा-शिशु रे । १३. उर कुच युग उर-आँचर । ९. निकसलि । १०. कारन । ११. रह ।

विशेष :—पाँचम-छठम पंक्ति सातम-आठम पंक्तिक बाद छैक । अन्तिम भणिता युक्त दुहु पाँतीक अभाव छैक ।

६
तिरहुति

ना धरु ना धरु हे कर मोर कन्हई
 हम पर नागरि हे तो हे जादवराई
 छीक पड़ल धर हे दधि चललहुँ बीकय
 बाटहि भगड़ भेल हे ज्यों पलटव नीकय
 [दधि-दुध] गोरस बिसस भेल हे नहि लेत गहिकिनिजा
 सासु ननदि धर [दारुन] हे मोरा कहत कहिनिजा
 सखि अगुआइलि हे वन माँक नडाए (ई)
 कि करव कानू (हे) (हम) तोहर बड़ाई
 नन्दीपति कहु (हे सुनु) कुमारकन्हई
 पार कइए दयह एहि-दह हे तोर नन्द दोहाई
 दाइजी, खोजपुर, दरभंगा



विशेष :— ई पद सर्व प्रथम बेर प्रकाशमे आवि रहल अछि ।

१, २, छन्दक अनुरोधे अनपेक्षित अछि । ३, संशोधित । ४, ५, ६, मूलमे ई सङ्ग्रह
 दुदा छन्दक अनुरोधे अपेक्षित अछि ।

तिरहुति

माधव ई नहि उचित विचारे
 जेकर एहन धनि काम कला सनि से किए कर व्यभिचारे
 प्राणहु ताहि अधिक छलि ये धनि हृदयक हार समाने
 को परि आन कयोन विधि ताकिय कि कहव तनिक गेआने
 पदल पुरुष भय मुरुष भेलाहि तोहे सहजहि ई अरविन्दा
 से मिनुआरि कुसुम तेजि सेविय सहजहि भग्दर मलिन्दा (?)
 कृपण काँ कैअओ नै भल कह इ अछि जंग उपहासे
 निय धन अछैत से नहि भोगिय केवल परहिक आसे
 नन्दीपति भनिय रसिक जन की फल अधिक जेनाई
 माहि आनिय बिच तेँ जँ होय नित अपन करिये कैथिलाइ
 प्राचीन हस्तलेख सँ



- [१०] प्रस्तुत पद विद्यापतिक नाम पर पूर्ण प्रचलित अछि । श्रियसैन, नगेन्द्रनाथगुप्त तथा विमानविहारीमधुमदार विद्यापतिक प्रामाणिक पद मानने छथि, किन्तु हमरा ई नन्दीपतिक भणितामे एक प्राचीन तिरहुता हस्तलेखमे उपयुक्त रूपमे उपलब्ध भेल । ई हस्तलेख सम्प्रति प्रोफेसर डाक्टर जैलेंद्रमोहन झा, मैथिली-विभाग, सी०एम्०कालेज, दरभंगाक लगमे सुरक्षित छनि । नीचाँ श्रियसैनक पाठ दऽ रहल छी जाहिमे अन्य भिन्न पाठक संग पाँचम-छठम पंक्ति अभाव छक ।

माधव ई नहि उचित विचारे
 जनिक एहन धनि कामकला सनि ने किए कर व्यभिचारे
 प्राणहु ताहि अधिक कय मानय हृदयक हार समाने
 कोन परियुक्ति आन केँ लाकाव की बिक हुनक गेआने
 कृपिन पुरुष केँ केओ नहि निक कह जगभरि कर उपहासे
 निज धन अछइति नहि उपभोगव केवल परहिक आसे
 भनहि विद्यापति मुनु मधुरा पति इ धिक अनुचित काजे
 भोगि लायव बित से यदि होय नित अपन करव कोन काजे

श्रियसैन, — ५१, नगेन्द्रनाथगुप्त — ३७७

वि०वि०मधुमदार — ३८०

११
तिरहुति



२१

माधव एहन दिवस भेल मोरा
अपन करम फल हम उप भोगव ताहि दोष कोन तोरा
जाहि नगर चानन हनि चीन्हायि अइह आदर कए रोपे
बिसु गुन बुझल जनिक अनोदर उचित न तापर कोपे
सगुन पुरुष निरगुन नोनल जौ जीवन जइ के देला
जौ करमी फुल सबहु सराहिए तौ कि कमल गुन भेला
थल गुन आन ठाम परगोसल तौ की तनिक अभेला
गिरिदर ताहि तिमिर रह तापर रवि महिमा दिन भेला
जनिक सरसमन ताहि कहिए गुन पसु सिसु अबुध न बूझे
नन्दीपति मन तौ देखु दरपन आन्हर काँ की सूझे

T. V. H, I.V.

[११] मै० लो० गो० (पृ० २५६) ओ मि० गी० सं० (भाग-१, गीत-२३) क पाठान्तर

१. माधव की कह्य कुदिवस मोरा । २. करम ३. उपभोगल ४. जाहि ५. नहि ६. चीन्हे
७. अदर ८. के रोपे ९. गुण १०. तनिक ११. तापर उचित न कोपे ।

चारि पंक्तिक बाद मै० लो० गो० मे शेष पंक्ति निम्न रूपमे अछि :—

पहल पुरुष यदि नयन गमाओल तँ नहि करिय अभेला ।
जौ करमी फुल कोन सराहल तौ की कमल गुन भेला ॥
सुखन पुरुष निरगुन जग निन्दल जइके गोरव बूझै ।
नन्दीपति इहो मन दय बूझिय आन्हरकेँ की दरपन सूझै ॥

चारि पंक्तिक बाद मि० गी० सं० मे छैक

पहल पुरुष थल दुल दुइ प्रकाश गमाओल तँ नहि करिय अभेला
जौ करमी फुल कोन सराहल तौ की कमल गुन भेला
सुखन पुरुष निरगुन जग निन्दल जइके जीवन देल
गिरिधर ताहि त्रिवेणी बहु तापर रवि महिमा किछु भेल
जनिका कनक परस होय सुझौल पसु शिशु अबुझ की बूझै
'नन्दीपति' इहो मन दय बूझिय आन्हरकेँ की दरपन सूझै

घटगतनी

चन्द्र वदनि नवि^१ कामिनि सजनी^२ यामिनि अति अन्हियारि^३
 सखि सङ्ग चललि केलिघर^४ सजनी कर-पल्लव^५ दिप^६ वारि^७
 पवन भिकोर^८ जोर वह सजनी तेँ लेल अञ्जल काँपि^९
 देखि उरज अति उन्नत^{१०} सजनी दीप^{११} रासि उठ काँपि^{१२}
 भप भप कए कत काँपए सजनी विलसि धुनए निज माथ^{१३}
 कथि लए जनम देल मोर^{१४} सजनी चतुरानन विनु^{१५} हाथ^{१६}
 नन्दीपति कवि गाओल सजनी ई जग थीक कुमान^{१७}
 परस उरज अति सुन्दर सजनी 'माधव सिंह' रस जान^{१८}
 मै० गी० २०, पृ० ४४, गीत—७५

[१२] पाठान्तर :—

मि० गी० सं० (भाग-३, गीत ३७) ओ मै० लो० (पृ० २७३) :—१. नव, २. सजनी मे,
 ३. गृह, ४. पंकज, ५. दीप, ६. अकोर, ७. बल, ८. सुन्दर (उपयुक्त पाठ मै० लो०
 सं०), मै० गी० २०—सुन्दर ९. (मै० गी० २०—तेँ ओ) १०. भप भप करत झुकत फेर
 सजनी मे, आल घुन शिर माथ, ११. दैव जनम देल, १२. विन, १३. अन्तिम उभय
 पंक्ति अभाव छैक ।

टिप्पणी :—तारादेवी गोनौन, दरभंगा सँ प्राप्त गीतमे अन्तिम दुनु पंक्ति छैक जाहिमे
 माधवसिंहक उल्लेख अछि । किन्तु हमरा संदेह अछि जे ई गीत रत्नावली-
 एक जनकृतिनै होअय । गीत रत्नावलीमे ई भनिता कतअसँ उपलब्ध भेलनि
 तकर कोनो संकेत कवियोंसर जी नहि देने छथि ।

बटगतनी

माङ्ग^१ चांह चिकुर भर^२ सजनी सहजहि^३ दूबरि देह
 प्रथमहि सुपहु^४ समागम सजनी उपजल^५ अधिक सन्देह^६
 दूरहि^७ सुतलि विमुखभए सजनी विरल बसने^८ मुख भाँपि
 अभिनव केलिक नामहि^९ सजनी नहि नहि कए उठु^{१०} काँपि
 नूपुर काढ़ि नराओल^{११} सजनी हरल बसन अवशेष^{१२}
 भाव भरल नव^{१३} नागर सजनी उनमत भेल विशेष^{१४}
 नयन नोर^{१५} भरि बाजलि सजनी भल^{१६} शपथ^{१७} क निरवाह
 पुरुष न जान नारि दुख^{१८} सजनी केवल निज^{१९} सुख चाह
 आलस अलक वेयाकुल सजनी न रहलि निजवश नारि^{२०}
 अति कौशल पहु परसल^{२१} सजनी एहि अवसर अवधारि^{२२}
 धैरज धए रह सुवदनि ! सजनी इएह उचित एहि ठाम^{२३}
 नन्दीपति विनु साइस सजनी सुखद न होअ परिणाम
 मे० गी० २०, पृ० ४३, गी०-७४

[१३] T. V. H. VI क पाठान्तर :-

३. पहु से ५. सोह ६. दुरनी ७. नसन ८. उठि ११. अवसेलि १३. अति उनमत भेल देखि
 १६. शपथक १७. नागर न नुज नारि दुख १८. निज १९. दुहु पंक्ति के अभाव छैक ।

विशेष :- अन्तिम पुष्पिका निम्न लिखित रूपमे छैक -

नन्दीपति कवि बाओल सजनी वैह उचित एहि ठाम ।

साहस तह पुनु लहु थिक सजनी सुखद होवत परि नाम ॥

मि० गी० सं० (भाग-१, गीत १६) क पाठान्तर :

१. भागहि २. भेल ३. पहुक ४. बाइल ५. दुरिभय ७. विरह बसन ८. नामे ९. उठि

१०. नैराओल १३. भेल १४. नीर १५. शपथ अपन १२. छल १३. अति उनमति 'त्ति' भेल । ४३

देख १९. दुहु पंक्ति के अभाव छैक ।

२१. अन्तिम दुहु पंक्ति के स्थानमे विद्यापतिक भविता युक्त निम्न दुइ पंक्ति छैक ।

भगहि विद्यापति बाओल स० क्यो जनु नेह लगाव ।

भाव एकर हम को कहब स० जे सुन मे दुख पाव ॥

विशेष :- पाँचव ओ छठम पंक्ति मि० गी० सं० मे सातम-आठम केर बाद छैक ।

मन्तव्य— मे० गी० २० केर उपर्युक्त पाठमे-२०, 'पसरल' से 'परसल' संशोधित पाठ ।

बटगवनी

की कहू पहु परदेश गेल सजनी गे
 की कहू किछु ने सोहाय
 फूजल केश नीर बहु सजनी गे
 काजर गेल दहाय
 चूड़ी बसन भार भेल सजनी गे
 भेल यौवन अति भार
 आछन मोरा लेखे विजुवन सजनी गे
 मर भेल दिवस अन्हार
 हरि भिनु सेल सल भेल सजनी गे
 गेल्या मोहि ने सोहाय
 जी नहि प्रीतम अओताह सजनी गे
 मरव जहर विष खाय
 नन्दीपति मन मन दय सजनी गे
 मन जनु करिय उदास
 तकर कतेक अभिलाखन सजनी गे
 देलन्हि बहु विश्वास

नि० गी० सं०, भाग-४, गीत-५

[१४] विशेष:— H.M.L. Vol I.P. 418, f.n. 56 [c] मे कहल गेल अछि जे ई गीत हुनक नाटको मे छनि, किन्तु नाटक मे ई गीत छैक नहि ।

i. म० लो० गी० मे कतिपय पंक्ति सान्ध युक्त गीत छैक:—

एते दिन भँवरा हमर छल सजनी ने
 जाव गेल मोरग देश
 मधुपुर पियहु लोमाखल सजनी ने
 मोरा किछु कहियो ने गेल

आगन लागए विषम रुख सजनी मे
घर भेल विषम अन्हार
फूल केश अभैस भेल सजनी मे
गैरुला मोरो ने सोहाय
आजु पिया नहि आवत सजनी मे
मरव जहर विष लाय

पृ० २८५-८६, बटगवनी गीतसं०-२१

ii. बरक उदासीक एक गीतसँ साम्य छैक—

आहि दिन पिया परदेस भेल सजनी मे
ताहि दिन किछु ने सोहेल
आखन मोरा लेखै विजुवन सजनी मे
घर लाने दिवस अन्हार
सूतक मेज अगिन मन सजनी ने
गेरुआ मोहि ने सोहाय
खूजल केश निर भेल सजनी मे
नयन काजर भेल दहाय
पुरुष वचन निफल भेल सजनी मे
सपतक ने परमान

—गाइनि

१. कुषाल दाइ २. कुसुम सुजरी

ग्राम सहोदा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा ।

iii. एकटा आरौ गीत सँ तुलनीय अछि—

एते दिन जमरा हमर छल मे सजनी
आइ भेल सारक देस
मधु विवि जमरा लोभित भेल सजनी मे
मोहि किछु कहियो ने गेल
सिन्दुर चिन्दुर मोहि ने सोहाय
बहु बिनु भुन भेल लाली कलहिया
गेरुआ मोहि न सोहाय
पुरुषक जाति अपन नहि सजनी मे
मरव जहर विष लाय

—गाइनि

इतिम सुजरी (संका)

ग्राम सहोदा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा ।

गवालरी

चलली^१ मधुपुर^२ साजि रे दधि बेचन वाला^३
 यमुना निकट तट जाय रे रोकव^४ नन्दलाला^५
 मुख अंचर^६ पट ओत^७ रे रमसि हँसु भामा^८
 पुलकि^९ पुरल तनु देह^{१०} रे देखि सुन्दर श्यामा^{११}
 मुरली अधर विराज रे सुन्दर सुख^{१२} रासी
 मन मोरा^{१३} हरल गोपाल रे गोकुल के^{१४} वासी
 जाय देवन्धि^{१५} उपराग रे यशोदा^{१६} महारानी
 तोरपुत^{१७} हटलोने^{१८} मान रे लटय गालबि(?)रानी^{१९}
 नन्दीपति मन नेह^{२०} रे सुनु गोप गोआरी^{२१}
 तोहि छ्यादि भजहिने आन रे^{२२} नोखे गिरधारी

दाइजी, सोजपुर, दरभंगा

[१५] मै० गो० २० क पाठान्तर, गांव संख्या-५०

१. चललि २. मधुपुर ३. रोकल ४. अञ्चल ५. ओट ६. हए जिहूँसलि बाना ७. पुलक
 ८. तन नेह ९. मुख १०. मोर ११. केर १२. जाए देव १३. यशोमति १४. 'तोरपुत'
 क स्थानमे 'हरि' १५. नहि १६. लूट माल विरानी १७. गौरीपति कवि मान रे
 १८. कुमारि १९. तव लेखि भजिअ मुरारि रे।

विशेष :- छठम पंक्ति बाद दुइ पंक्ति आरो छैक—

करव कुलोग परकार रे सोचए अचबाला।

पहल कुञ्ज बन साजि रे बेरी भेल जाला।।

भरिखा ने 'गौरीपति' छैक।

१६

ग्वालरी

जसुमति सुत^१ मुरारी ना
 सखि हे लेलन्हि जमुना घटवारी ना
 चलली दहि^२ दुध बेचय^३ ना
 सखि हे संग दोसर नहि थिक ना
 कत कत कयल निहोर ना
 सखि हे नहि युक्त परम कठोर ना
 आयल^४ जमुन^५ जल वादी ना
 सखि हे भेलहु कदम तर ठाढ़ी ना
 बाट भेटिय^६ गेल कान्ह ना
 सखि हे ओही वृन्दावन माझ ना
 नन्दीपति कवि भान ना
 सखि हे नन्द तनय रस जान ना^७

स्व० महेस्वर ठाकुर,
 भीठ भगवानपुर, दरभंगा

[१६] मि० गी० सं० [चतुर्थ भाग, पृ० ६, गीत-७] क पाठान्तर :—

१. जसुमति सुत २. दही ३. बेचन ४. अयली ५. जमुना ६. नेटिय ७. भनहि विद्या-
 पति ८. एही प्रकारक वाक्यांशक हेतु देखू कु० के० मा० पृ० १९, २८, ३०, ३९, ४०

अम्बर धैल^१ उतारी
 से लै^२ कदम^३ चढ़ल मुरारी
 अमरन^४ एक बरु लैह^५
 हरि परिघार^६ वसन मोर देह^७
 सबहि^८ सखी घर जाये^९
 हम किये एतेखन विलमाये^{१०}
 हमहि^{११} बुझिय^{१२} तोर भावे
 से मन बासी^{१३} करह हरि आवे^{१४}
 मोरा^{१५} मुख अवइत^{१६} आगी
 नेह करह हरि अतेवे री लागी^{१७}
 नन्दीपति कवि गावे^{१८}
 नन्द तनय रस बूझ आवे^{१९}

प्रि० गी० तं० (भाग-४, गीत-१२)

[१७] कृष्ण केलिमाला (तृतीय अंक, पृ० ३८) क पाठान्तर

१. धैल २. लण ३. कदमतक ४. अमरण ५. लैह ६. परिधान ७. देहे ८. सबहुँ
 ९. पट पाऊँ १०. हमरहि किए एतेखन विलमाऊ ११. हमहुँ १२. बुझिए १३. बासि
 १४. आवे १५. मुझ १६. अवइत १७. तोहउँ करह हरि तन(त) बहि लागी १८. गावे
 १९. रसमय युग भावे ।

विशेष : - तवम-दसम पंक्ति सातम-आठम से पूर्वें छेक । छठम पंक्ति बाद निम्न
 लिखित चारिपंक्ति आश्वोरो छेक—

एति कौतुक किए - तोही
 कारण कभौन कहह बुहु मोही
 कीए तोहैं पारह नारी
 हमें न तोहर हरि सरहोज सारी

अन्य पाठान्तर

३. कदमहि ६. परिहृत (पहिरन) १३. बासि १५. मोर १६. आवय १७. एतवए लागी ।

१८

मान

'आव उचित नहि मान' ॥श्रु०॥

एखनुक रीति^१ हम बेहन^२ देखै^३ छा^४ जागल पै^५ पचवान^६
 कुसुमा^७ रचित सेज दीपक^८ देखि^९ धिर नहि रहय^{१०} गेआन^{११}
 तखनुक धरज धरय न पावि (र) अ^{१२} सुनि सुनि पिक निक गान
 जुड़ि^{१३} रनि^{१४} चकमक^{१५} कर^{१६} चानिनि^{१७} एहन समय नहि आन
 एहन समय^{१८} पहु मिलन जेहन थिक^{१९} जकरहि हो^{२०} से जान
 त्रिवलि तरङ्ग शिता शित^{२१} संगम उरज^{२२} शम्भु^{२३} निरमान^{२४}
 आरति पहु^{२५} प्रतिग्रह^{२६} मज्जइछ^{२७} करु घनि सर्वस दान^{२८}
 कुसुम कुसुम कत विलासि विलासिनि^{२९} अलि मालति करु मधुपान^{३०}
 अपन अपन पहु सबहु^{३१} जेमाओल भूपल तोर मेजमान^{३२}
 हम कि कहव सखि तोहें^{३३} कमलमुखि अपनहि करु समधान^{३४}
 सञ्चित मदन वेदन अति^{३५} दारुण^{३६} नन्दीपति^{३७} कवि मान

अष्टावलि माला तृतीय अङ्क पृ० ६३

[१८] मि० गी० सं० क पाठान्तर

२. ने रमणी (अधिक छेक) ३. अतु ४. एहन ५. देखै ६. कुसुम ७. दीप दीपक
 ११. रहत १५. रहति १६. ई शब्द नहि छेक १७. करु १८. जानन १९. एहि अवसर
 २०. मुख २१. जकरे होइ २२. उर २३. निम्मान २४. रति २५. नछे छे २६. कर घनि
 सर्वसु दान २७. हरति हरति अलि विलासि विलासि घनि करइ अवसर मधुपान २८. सबहि
 २९. जमाओल भूपल तुअ यजमान ३०. तन ।

विशेष :—चरित्र ओ एगारहम वक्तिक अमान छेक । तेकर वक्ति मि० गी० सं० में
 दशम वक्तिक बाद छेक ।

अध्यास क पाठान्तर :—

१. मानिनि (आरम्भ होइत छेक) २-६. रंग एहन तन लगइछ ७. पय ८. पचवान
 ९ १२. दीप दिपक देखि धिर न रहइ अन. दुइ कम अपन गेआन १४. जुड़ि १५. रमनि

१८. जानन १९. एहि अक्षर २०. तुल २१. होए २२. सितासित २४. मन्थ २६. पति
२७. परतिग्रह २८. भगइछ २९. सरवड दान ३१. रभसि रमसि अलि विलसि-विलसि करि
जेकर अक्षर मधुपान ३३. जेमाओलि भूलल तुअ जजमान ३५ विद्यापति ।

विशेष :—एहमे मि० गी० सं० जकां चारिम ओ एतारहम पंक्तिक अभाव छैक । पाँचम-
छठम पंक्तिक बाद नवम-दशम पंक्ति देल गेल छैक । तेसर पंक्ति आठम पंक्तिक
बाद अवलोक अछि । भणितामे विद्यापतिक नाम छनि । प्रियसीनक पद संख्या-
५० केर अनुसरण करैत नगेन्द्र नाथ गुप्त पद संख्या ४१२ मे तथा विमान
विहारी मजुमदार पद संख्या ४८२ मे निस्संकोच भावें विद्यापतिक पद मानि
लेलनि । मि० गी० सं० भाग-१, गीत सं० ५९, पृ० ४० मे स्पष्टतः 'नन्दीपति'
भणित अछि । ईह गीत उपर्युक्त रूपमे 'नन्दीपति' भणित सँ युक्त, हुनक
कृष्णकैलि माला नाटकक तृतीय अंक (पृ० ६३) मे राखिकाक मान तोड़बाक
हेतु लल्लि विशालाक्षीसँ गवाओल गेल अछि । अतः निस्सन्देह ई गीत विद्यापतिक
नहि, नन्दीपतिक थिकनि ।

पाठ शुद्धि :—

१०. छन्दानु रोचें 'दीपक' क बाद हुइ मात्रा अपेक्षित सँ 'दिप' वा 'सित' देल जा
सकैछ ११. 'पाविअ' के 'पारिअ' सेहो बदल जा सकैछ २२. सितासित ३०. 'विलसिनि' के
छन्दानुरोधे 'विलसि' कऽ देल जाय वा 'अलि' के हटा देल जाय ।

तिरहुति

'कओने अवगुन' पहुँ तेजलन्दि हमरा
 पर रे रमनि रस लुबुधल भमरा
 निज करु निन्द परस निन्द गेल
 निन्दक भरम भेल पहुँक सन्देह
 ओहि अवसर हम उठलहुँ जागी
 हरि हरि कहैत परम दुख भागी
 पिया पिया करैत पयोधर भारी
 कतेक दिन नयन बहत जलधारी
 ककरि रमनि थिकहुँ कहु मे ताही
 देखलहुँ तोर धनि विरह बताही
 कवि वादरि ई थिकनि सन्देह
 जतेक विरह होन्हि ततेक सनेह

दाइजी, खोजपुर, दरभंगा

[१६] क० के० भा० (अंक-३ पृ० ६६) क पाठान्तर :—

१. की लनि २. दोखे ३. (नहि छैक) ४. मोरा ५. भमरा ६. निजकर परसि.....
 (खण्डित) ७. निजक ८. पिआक ९. सन्देहा १०. तेहि ११. उठलहुँ जागि १२. भौलहुँ
 १३. भागि १४. हेरि हेरि पीन १५. भारे १६. कत १७. तेजव नयन १८. घारे १९. ककर
 २०. रमणि हम कहिहू ताही २१. देखलि २२. तोहर २३. विकल २४. नन्दीपति कह
 तखनुक नेहा २५. बेहन २६. हो तेहन सिनेहा ।

विशेष :—आठ पंक्तिअ बाद चारि पंक्ति आखोर छैक :—

उपवन उपगत दक्षिन समीरे
 किदहुँ होएत पुर परसि गरीरे
 मन छल सुपहु होएत सुख दाता
 नव परिचय नव विरह विधाता

जसोमति^१ भोर उपरागे । हरिक चरित^२ मोहि^३ बड़ मन्द लागे
जाइत जमुना पथ आजे । वन सँ^४ बाहर मेल जुवराजे^५
आँचर धएलन्हि^६ मोरा । कालहुक जनमल तोहर किशोरा^७
तखनुक तसु व्यवहारे^८ । आव कि^९ कहव हम अपन कपारे^{१०}
कोर सुतल तोर कान्हे । तेँ जनु बूझह^{११} हरि छुथि नान्हे
एतय^{१२} करथि तन^{१३} पाने । ओतय कटै छुथि तरुनक^{१४} काने
नन्दीपति कवि गाई^{१५} । जननि जसोमति^{१६} नहि पति आई

T. V. H. VI

[२०] कु० के० मा० (पृ० २६) क पाठान्तर :—

१. जसोमति २. चरित्र ३. माइ ४. वन सँ ५. यदुराजे ६. धवलन्हि ७. तोर
किशोरा ८. वेवहारे ९. सेकी ११. जानह १२. एतह १३. वन १४. तरुनक १५. कहहु मखी
गण मन लाई १६. जसोमति

टिप्पणी :—प्रस्तुत सातम-आठम युग्मक पाँती एहिमे पहिल युग्मक पाँतीक बाद
छैंक । अन्तिम पाँतीसँ पूर्व एक युग्मक पंक्ति और छैंक :—

पूछह सखी तेआनी, नहि परमान होइत भोर आनी ॥

अन्तमे भनिता युक्त युग्मक पंक्ति छैंक :—

नन्दीपति कवि अवधारी, कृष्ण चरित्र राम छकित गोवारी ॥

मैथिली पद्य संग्रह (पृ० ३५-३६) क पाठान्तर :—

३. माइ ४. वनलज्जी ५. यदुराजे ७. तोर किशोरा ८. वेवहारे १०. कपाड़े
११. जानह १२. एतए १३. वन १४. तरुनक १५. कह को विद मन लाई ।

टिप्पणी —कृष्णकेलि माला जहाँ एहूमे सातम आठम युग्मक पाँती पहिल युग्मक
पंक्तिक बाद छैंक । अन्तिम युग्मक पंक्ति सँ पहिने एहूमे युग्मक पंक्ति
छैंक —

पूछह सकललि आनी । तेहि परमान छेइत भोर वानी ॥

अन्तिमे 'कोविद' छैंक । कृष्णकेलि माला जहाँ अतिरिक्त पंक्ति नहि छैंक ।

हरि हे अति आकुल मन मोरा
 कतेक सहव दुख कौतुक तोरा
 एहि जमुना जल कतहु न थाहे
 लए ग्रिमहार पार लए जाहे
 चहुदिस घन बुन्द वरिसए मेहा
 अब कि करव सखि जिवहु सन्देहा
 भौंभरि नाव दुटल करुआरे
 कोन परि उतरव एहो भव पारे
 सब सखि मिलि बैसलि हिया हारी
 विनु पुरुख पथ न चड़िए नारी
 नन्दीपति जल बीच अपार
 डगमग नैया करु माँझहि धार

T. V. H. V. II

[२१] कृ० के० मा० (पृ० ४५) क पाठान्तर :-

दुनूमे ततेक अन्तर छँक जे सौंसे गीते उद्धृत कऽ देव उचित होयत ।

हरि हे अति आकुल मन मोरा ०
 कतेक सहव हमें कौतुक तोरा ॥
 फूटलि नाओ दुटल करुआरे ०
 कोने परि हमे धनि उतरव पारे
 एहि जमुना जल कतहु न थाहे ०
 देव ग्रिमहार पार लए जाहे ॥
 बने बुन्द वारिस वसहु दिशि मेहा ०
 आवे अधिक भेल जीव सन्देहा ॥
 अबहु सखी मिलि हलु हिया हारी ०
 विनु रे पुरुख पथ अनू चहु नारी ॥
 नन्दीपति कजोन उषाह ०
 डगमग नाओ करहु अछि माई ॥

अंगरेजी पोथी

१३. History of Maitbili Literature Vol I, 1949 Dr. Jaikant Mishra Tirbhukti H. M. L. Allahabad-2
१४. History of Tirhut, 1922 Shyam Narayan Singh, M. B. E, Ray Bahadur The Baptist Mission Press, Calcutta
१५. Maithili Chrestomathy 1880 (Journal of the Asiatic Society of Bengal Extra number I) G. A. Grierson, I. C. S. प्रियसन
१६. Proceedings of All India Oriental Conference XII
१७. Twenty-one Vaishnav Hymns, 1884 (Journal of the Asiatic Society of Bengal I) G. A. Grierson T. V. H. I. C. S.

हिन्दी पोथी

१८. हिन्दी साहित्य और बिहार (द्वितीय खण्ड), १९६३ आचार्य शिवपूजनसहाय बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

